समाजवाद

अध्ययन सामग्री निर्माण

डा शकील हुसैन

shakeelvns27@gmail.com

विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय ।

दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।

नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

समाजवाद के अवधारणा के बारे में सबसे रोचक टिप्पणी **सी ई एम जोड** ने की है " **समाजवाद उस टोपी की भांति है जिसकी शक्ल इसलिए बिगड़ गई है क्योंकि इसे बहुत सारे लोगों ने पहना है"** । वास्तव में समाजवाद' शब्द इतना प्रचलित है कि इसकी सटीक व्याख्या करना बड़ा कठिन कार्य है। इसके इतने रूप हैं है कि भ्रम हो जाता है कि समाजवाद है क्या ?

इसकी अवधारणात्मक कठिनाई के बारे मे पंत,,गुप्ता और जैन नेलिखा है कि

" यदि हम इन विभिन्न शाखाओं प्रशाखाओं को भी छोड़ दें तब भी समाजवाद को समझ सकना सरल नहीं है। सर्वप्रथम कठिनाई यह है कि 'समाजवाद' की परिभाषाओं की इतनी भरमार है और उन सब में परस्पर अत्यंत विभिन्नता है कि इस बाद को एक संक्षिप्त परिभाषा की चहार-दिवारी में सीमित कर सकना असंभव सा लगता है। कुछ परिभाषायें तो बहुत संकुचित हैं और कुछ आवश्यकता से अधिक व्यापक, कुछ एक पक्ष पर अत्यधिक प्रकाश डालती हैं कुछ उस पक्ष को अन्धकार मय रखकर दूसरे पर। यह मतविभेद भ्रान्ति उत्पन्न करता है।"

दूसरी कठिनाई 'समाजवाद' के स्वरूप की है

" कुछ लोग इसको केवल एक आन्दोलन (movement) मानते हैं और कुछ दर्शन (Philosophy) | यह राजनीतिक व्यवस्था (Political order) मी है और आर्थिक प्रणाली (economic system) भी। प्रोफेसर लास्की के कथनानुसार समाजाद एक आदर्श (Ideal) है और एक साधन (method) भी। इसका आदर्श एक ऐसे समाज की

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

स्थापना करना है जहाँ उत्पादन के साधनों तथा वितरण (distribution) पर सामाजिक नियंत्रण होने के कारण विभिन्न सामाजिक वर्गों को मिटा दिया जायगा। इस आदलं की प्राप्ति के हेतु यह अपना साधन (method) एक सामाजिक क्रान्ति (Social revolution) मानता है जिसके फलस्वरूप सर्वहारा अधिनायकत्व (Proletarian dictatorship) स्थापित की जा सके।"

तीसरी समस्या समाजवाद की गतिशीलता है । क्योंकि समाजवाद को स्थिर सिद्धांत नहीं है कार्ल मार्क्स के स्वयं के विचारों में भी काफी प्रगति दिखाई देती है तरुण मार्क्स और परिपक्व मार्क्स के विचारों में पर्याप्त अंतर है अपने जीवन के संध्याकाल में मार्क्स हिंसक क्रांति के प्रति इतना आस्थावान नहीं रह गया था जितना वह प्रारंभ में था इस प्रकार मार्क्स के बाद के बाद स्वाद और मार्क्स के मार्क्सवाद में काफी अंतर है मार्क्स में समाजवाद की वजह है साम्यवाद या कम्युनिज्म शब्द का इस्तेमाल किया था मार्क्स के कथित शिष्यों लेनिन स्टालिन और माओ ने भी साम्यवाद शब्द का ही प्रयोग किया है इन तीनों ने अपनी अपनी सुविधानुसार मार्क्सवाद में मनमानी परिवर्तन किए लेनिन ने क्रांति को व्यवहारिक बनाने के लिए मार्क्सवाद में कुछ व्यावहारिक संशोधन किए उन संशोधनों को स्टालिन ने आगे बढ़ाया और मां से तुमने तो यह कह दिया कि रूस की क्रांति रूस की धरती से उत्पन्न हुई है चीन की क्रांति चीन की धरती से उत्पन्न होगी इस प्रकार मार्क्सवाद एक गतिशील अवधारणा है जिसमें देश काल परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होते रहे हैं इसलिए समाजवाद एक बहुत ही व्यापक शब्दावली है जिसमें लगभग 300 वर्षों की वैचारिक प्रगति समाई हुई है । इसलिए समाजवाद को तीन प्रमुख भागो मे वर्गीकृत किया जा सकता है ।

1- मार्क्स के पूर्व का समाजवाद
2- मार्क्स का वैज्ञानिक समाजवाद
3- मार्क्स के बाद का साम्यवाद ।
4- यूरो मार्क्सवाद या नव वामवाद ।

A- मार्क्स के पूर्व का समाजवाद

1- स्वप्नलोकीय समाजवाद
2- फेबियनवाद या लोकतांत्रिक समाजवाद
3- श्रमिक संघवाद
4- श्रेणी समाजवाद
5- समाजवादी अराकतावाद

B- मार्क्सवाद या वैज्ञानिक समाजवाद

C- मार्क्सबाद के बाद का साम्यवाद

दुर्ग (छत्तीसगढ़)
DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

1- लेनिन

2- स्टालिन

3- माओ त्से तुंग

4- चे गुएरा

D- यूरो मार्क्सवाद और नव वामवाद

1- ग्राम्शी

2- रोजा लक्जेम बर्ग

3- थियोडोर अडार्नो

4- फ्रांट्ज फैनन

5- मारकूजे

6- एरिक फ्राम

7- हार्खाइमर आदि ।

लेकिन तमाम विभिन्न नेताओं और वैचारिक अंतरों के पश्चात भी समाजवाद के माननीय वालों ने समाजवादी चिंतकों ने चाहे वह लोकतांत्रिक समाजवादी हो चाहे वह हिंसक क्रांति के द्वारा परिवर्तन की बात करने वाले मार्क्सवादी हो यह क्रांति को स्थाई बनाने वाले और निर्यात करने की बात करने वाले लेलिन वादी स्टालिन वादी और माओवादी हो इन सब में कुछ वैचारिक समानताएं हैं जिसके आधार पर समाजवाद की निम्नलिखित विशेषताएं बताई जा सकती हैं ।

विशेषताएं

1- व्यक्तिगत संपत्ति का उन्मूलन

2-उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व

3- समाज के आर्थिक संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण

4- उद्योगों का राष्ट्रीयकरण ।

5- उत्पादन के साधनों पर सामाजिक नियंत्रण आर्थिक 6- विषमताओं को न्यूनतम कर के सामाजिक कल्याण की प्राप्ति ।

6- वर्ग संघर्ष या सामाजिक संघर्ष में विश्वास

7- समाजवाद ही अंतिम लक्ष्य

8- एक समरसता पूर्ण समाज का आदर्श ।

9- समाज की आर्थिक व्याख्या ।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

10- सामाजिक समस्याओं का र्थिक समाधान ।

11- समाज में आर्थिक वर्गों की उपस्थिति में विश्वास ।

12- सामाजिक राजनीतिक समस्याओं के आर्थिक निदान पर बल ।

13- राज्य को शोषणकारी यंत्र मानना ।

गृह कार्य

1- समाजवाद की विभिन्न धाराओ का परिचय दीजिए

2- समाजवादी चिन्तन की मौलिक विशेषताएं बताइए

संदर्भ

पंत एबी गुप्ता एम जैन एच एम (1986) : *राजनीतिक सिद्धान्त* ईलाहाबाद

आनलाइन रिसोर्स

https://iep.utm.edu/socialis/

https://www.econlib.org/library/Enc/Socialism.html

http://marxism.org/

https://www.jstor.org/stable/20098800

Feed Back link
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdRpNmu6PZ-AMoLrMvODCDwa6-tG3nPDU_Lk-VyjnKKhmfErw/viewform

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE